सामाजिक और भावनात्मक विकास का पोषण | कला शिक्षकों की भूमिका

शुभा एच.के.

विद्यार्थियों के सम्पूर्ण विकास में योगदान के लिए कला शिक्षा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। रचनात्मकता को बढ़ावा देने से आगे जाकर कला की गतिविधियाँ सामाजिक और भावनात्मक विकास के पोषण के लिए एक आधार उपलब्ध कराती हैं। फ़ाउंडेशनल स्टेज के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एनसीएफ़-एफ़एस) ने सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक शिक्षा (एसईईएल) के क्षेत्र के तहत पाठ्यचर्या सम्बन्धी स्पष्ट लक्ष्यों और दक्षताओं को रेखांकित किया है। हालाँकि परम्परागत विषयों के विपरीत सामाजिक-भावनात्मक विकास के क्षेत्र को अलग-अलग कक्षा के खानों में नहीं बाँटा जाता। इसकी बजाय, इसे विभिन्न विषयों के साथ एकीकृत किया जाता है, जो एक ख़ास तरह की चुनौती और अवसर प्रदान करता है।

यह लेख कला-दक्षताओं को हासिल करने के उद्देश्य से की जाने वाली ख़ास गतिविधियों के बीच अन्तर-सम्बन्ध और विद्यार्थियों में सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक शिक्षा (SEEL) की दक्षताओं के विकास के साथ उनके सह-सम्बन्धों पर प्रकाश डालता है। ये गतिविधियाँ निम्न दक्षताओं को लक्ष्य बनाती हैं :

C-12.1 : विभिन्न आकारों की द्विआयामी और त्रिआयामी कलाकृतियाँ बनाने के लिए विभिन्न प्रकार की वस्तुओं और उपकरणों की खोज करती है और उनके साथ काम करती है।

C-12.2 : संगीत रचने, भूमिका निभाने, नृत्य और विभिन्न तरह की गतियों के लिए अपनी आवाज़ शरीर, स्थानों और विभिन्न तरह की वस्तुओं की खोज करती है और उनके साथ काम करती है।

स्रोत : फ़ाउंडेशनल स्टेज के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2.4.5 क्षेत्र : सौन्दर्यशास्त्रीय और सांस्कृतिक विकास, पेज-63

गतिविधियाँ

कक्षा-1 और 2 के विद्यार्थियों के लिए उनकी कला की कक्षाओं के दौरान शामिल की गई कुछ गतिविधियाँ यहाँ बताई गई हैं जिनसे ऊपर उल्लिखित सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक शिक्षा सम्बन्धी दक्षताएँ हासिल की जा सकें।

अपना चित्र बनाना

विद्यार्थियों से कक्षा में लगे एक बड़े आकार के शीशे में ख़ुद को देखकर अपना चित्र बनाने को कहा जाता है। उन्हें इसके लिए उत्साहित किया जाता है कि वे अपने चित्र में बारीकियों को शामिल करें जैसे कि बालों की लम्बाई और रंग तथा उनके द्वारा पहने गए कपड़े। चित्रों को उनकी आँखों की ऊँचाई के बराबर रखकर ही प्रदर्शित किया जाता है। जब सभी विद्यार्थी सभी चित्रों को देख लेते हैं तब हम उन विशिष्ट चीज़ों की चर्चा करते हैं जो प्रत्येक विद्यार्थी को एक-दूसरे से अलग करती हैं और इसी तरह सभी विद्यार्थियों के बीच समान चीज़ों की भी चर्चा करते हैं। इस गतिविधि से उन्हें न केवल उनके शारीरिक रूप पर प्रतिक्रिया देने में मदद मिलती है, बल्कि इससे उनमें आत्म-जागरूकता, अपनी पहचान के निर्माण और अपनी सम्बद्धता के एहसास को भी बढ़ावा मिलता है।

परिवार का कोलाज

हर एक बच्चे को एक काग़ज़ की शीट, एक पुरानी पत्रिका, कैंची और गोंद दी जाती है। उनसे कहा जाता है कि वे कोलाज बनाने के लिए पत्रिका से उन तस्वीरों को काटें जो उनके परिवार के सदस्यों से मिलती-जुलती हैं। इसके बाद हर एक बच्चा कक्षा में अपने कोलाज को सबके साथ साझा करता है। वह उसमें मौजूद हर एक तस्वीर को दिखाता है और बताता है कि वह तस्वीर किन लोगों को निरूपित कर रही है – उनके नाम, उनसे क्या रिश्ता है और बाक़ी ब्यौरे, जैसे वे क्या करते हैं। अगर उन्हें अपनी पत्रिका में कोई उचित तस्वीर नहीं मिलती तो वे अपने साथियों से उनकी पत्रिकाओं से तस्वीर साझा करने को कह सकते हैं।

जब हमने इस गतिविधि को किया, तो विद्यार्थियों ने अपने परिवार के प्रत्येक सदस्य के बारे में कुछ शब्द या एक वाक्य लिखा। उन्होंने इसमें अपने पालतू जानवरों और घर में अपनी पसन्दीदा जगहों को जोड़ा। रोचक बात है कि कक्षा-1 के कुछ विद्यार्थी अपने पिता के पेशे से अनभिज्ञ थे। उन्हें इस बात के लिए प्रोत्साहित किया गया कि वे अपने माता-पिता से इसके बारे में पूछें और उस जानकारी को साझा करें। शुरू में कक्षा-2 के कुछ विद्यार्थी अपने माता-पिता के इस तरह के पेशे बताने में झिझक रहे थे, जैसे घर की देखभाल करने का काम, बागवानी और घरेलू सहायक। अतः हर एक पेशे की महत्ता के

साथ ही इस बारे में चर्चा की गई कि प्रत्येक व्यक्ति का काम उनके परिवारों के लिए किस तरह योगदान करता है। हालाँकि अन्ततः विद्यार्थियों ने जानकारियों को साझा किया, लेकिन अपने परिवार के सदस्यों के पेशों की दिल से सराहना करने के लिए वे इसी तरह की कई गतिवधियों व चर्चाओं से गुज़रे। कुल मिलाकर, इस गतिविधि ने विद्यार्थियों में अपने परिवार के प्रति एक जुड़ाव पैदा करने में एक भूमिका निभाई।

परिवार, स्कूल और मोहल्ला

शिक्षक बच्चों को उनके अपने इलाक़े का नक़्शा दिखाते हैं – उनका घर और मोहल्ला – और यह दिखाते हैं कि स्कूल तक पहुँचने से पहले वे किन महत्त्वपूर्ण जगहों से गुज़रते हैं। शिक्षक बच्चों को अभिभावकों और परिवार के दूसरे सदस्यों के पतों और फ़ोन नम्बरों को जानने के महत्त्व के बारे में भी बताते हैं। विद्यार्थियों से कहा जाता है कि वे अपने अभिभावकों से इस बारे में बात करें और इन ब्यौरों को हासिल करें। शिक्षक प्रत्येक विद्यार्थी से अपने मोहल्ले के बारे में पहचानी जाने वाली महत्त्वपूर्ण जगहों को चिह्नित करते हुए इसी तरह का मानचित्र अपनी ड्राइंग बुक में बनाने और फिर इसे बाक़ी विद्यार्थियों को समझाने के लिए कहते हैं।

विद्यार्थी इस गतिविधि को पूरा करने में समय लेते हैं। उन्हें पते और फ़ोन नम्बर याद रखने के लिए अभ्यास और दोहराव की ज़रूरत होती है और मानचित्र बनाते समय उन्हें दिशाओं के बारे में मदद की ज़रूरत होती है।

हमारे विद्यार्थियों ने इस गतिविधि में उत्साहपूर्वक भाग लिया। कक्षा-2 के विद्यार्थियों ने इस गतिविधि को आगे बढ़ाते हुए एक नाटक रचा और उसमें ऐसी परिस्थिति बनाई जिसमें एक बच्चा खो जाता है और फिर अपने माता-पिता के पास लौट आता है क्योंकि बच्चे को सही पता मालूम था। इस गतिविधि से बच्चों को उनके आस-पास के माहौल के बारे में जागरूकता तथा समुदाय के साथ जुड़ाव के बोध को बढ़ाने में मदद मिली।

भावनात्मक अभिनय पहेली

शिक्षक छोटे-छोटे कार्डों पर विभिन्न भावनाओं को लिखते हैं (ख़ुशी, दुखी, क्रोधित, आश्चर्यचकित आदि) और प्रत्येक विद्यार्थी कोई एक कार्ड उठाता है और बिना बोले हुए उस कार्ड पर लिखी भावना का अभिनय करता है जबकि दूसरे बच्चों का काम इस भावना को पहचानना होता है। वे उन परिस्थितियों के बारे में चर्चा करते हैं जिसमें ख़ास भावनाएँ जागृत हो सकती हैं और इस बात की चर्चा करते हैं कि कैसे कोई ख़ास भाव-भंगिमाएँ या शारीरिक भाषा ख़ास भावनाओं को सम्प्रेषित करती है।

हमारे विद्यार्थियों ने कक्षा और घर की कुछ मज़ाकिया घटनाओं को साझा किया। कुछ बच्चे दुखी करने वाली घटनाओं को साझा करते हुए रो दिए। एक विद्यार्थी ऐसा कुछ भी साझा करने से हिचकती दिखाई दे रही थी जिससे वह दुखी हो। तब उसे इस बात के लिए प्रोत्साहित किया गया कि वह किसी भी सामान्य घटना को साझा करे, जैसे कि भाई-बहन से उसकी लड़ाई। उसने इसके साथ शुरुआत की। बाद में उसने अपनी दादी की मौत की बात साझा की और बताया कि इसका उस पर बहुत असर हुआ और वह अपनी दादी को कितना याद करती है। उसने रोना शुरू कर दिया और दूसरे बच्चे उसे चुप कराने लगे। इससे कई दूसरे विद्यार्थी भी उन घटनाओं को साझा करने लगे जिन घटनाओं ने उन्हें दुखी या भयभीत कर दिया था।

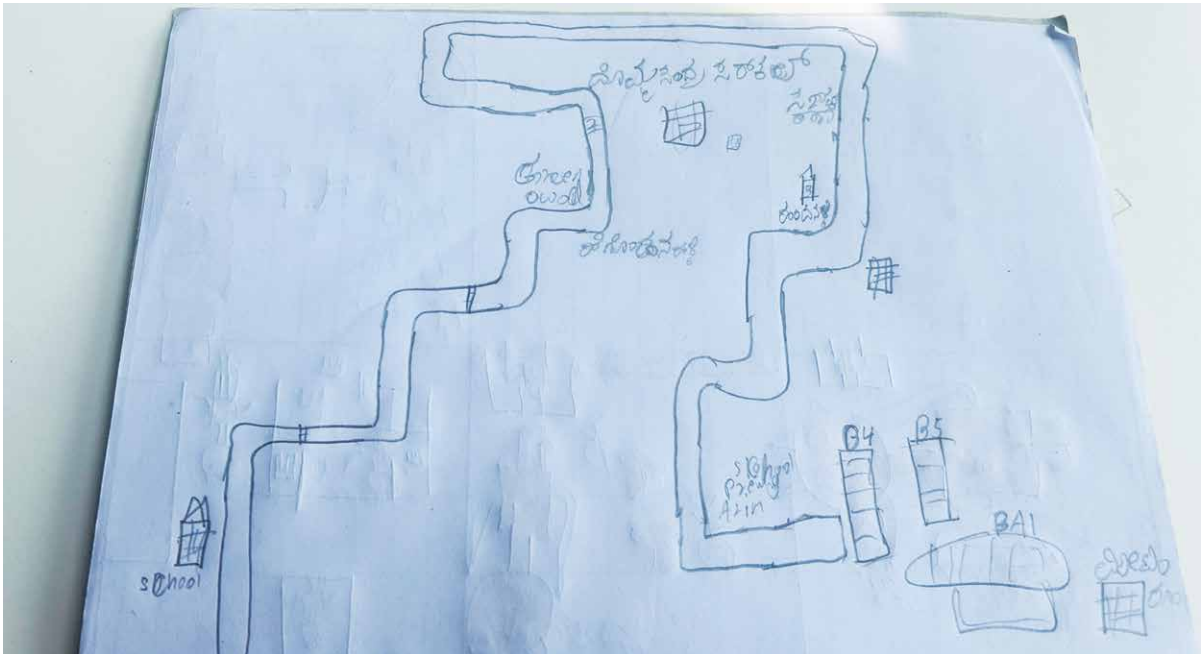

चित्र-1 : *विद्यार्थियों द्वारा बनाया गया उनके अपने इलाक़े का नक़्शा।*

कहानी सुनाना और उस पर अभिनय

रोचक क़िरदारों वाली सामान्य सन्दर्भयुक्त कहानियाँ, लहज़े के बदलाव, भाव-भंगिमा और आवाज़ के उतार-चढ़ाव के साथ सुनाई जाती हैं। शिक्षक और कुछ विद्यार्थियों द्वारा इन कहानियों को बार-बार सुनाया/ पढ़ा जाता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि सभी विद्यार्थियों ने इसे समझ लिया है। उसके बाद विद्यार्थियों को समूहों में विभाजित किया जाता है। प्रत्येक समूह से कहा जाता है कि वे संवाद लिखें, क़िरदार तय करें और अभिनय का अभ्यास करें। उन्हें नाटक में इस्तेमाल करने के लिए सामग्री मुहैया कराई जाती है या वे उपलब्ध संसाधनों का इस्तेमाल करते हैं।

प्रत्येक समूह को अपनी कहानी कक्षा के सामने अभिनीत करनी होती है और इस नाटक में प्रस्तुत अभिव्यक्तियों, संवाद अदायगी, नाट्य सामग्री और नाटक के घटनाक्रम पर विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया माँगी जाती है कि वे यह बताएँ कि उन्हें क्या पसन्द आया और किस चीज़ में सुधार की गुंजाइश है।

यह गतिविधि हमारी कक्षाओं में नियमित रूप से की जाती है और यह विद्यार्थियों के सामाजिक और भावनात्मक विकास के लिए एक उत्कृष्ट गतिविधि साबित हुई है। एक समूह के अन्दर कहानी के क़िरदारों के चुनाव और भूमिकाओं को लेकर बहुत असहमतियाँ और समझौते होते हैं। लेकिन विद्यार्थी ख़ुद ही अपने इन विवादों को निपटा लेते हैं और कभी-कभार इसमें शिक्षकों की थोड़ी सहायता लगती है। बहुत सामान्य तरीक़े के फीडबैक जैसे "मुझे उसका अभिनय अच्छा लगा क्योंकि वह मेरी दोस्त है," से आगे बढ़कर विद्यार्थियों का फीडबैक भाव-भंगिमाओं और अभिनय कौशलों पर किए गए इस तरह के बहुत ठोस अवलोकनों तक पहुँच जाता है, जैसे "उसे दुख भरी परिस्थिति दर्शाते हुए मुस्कराना नहीं चाहिए।"

संक्षेप में

कला दक्षताओं को हासिल करने के साथ विद्यार्थी इन गतिविधियों के ज़रिए सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक शिक्षा से जुड़ी ये दक्षताएँ भी हासिल करते हैं :

C-4.1 : 'ख़ुद' को एक परिवार और समुदाय से सम्बन्धित व्यक्ति के रूप में पहचानना शुरू करते हैं।

C-4.2 : विभिन्न भावनाओं को पहचानने लगते हैं और उन्हें उपयुक्त तरीक़े से नियंत्रित करने के लिए सचेत प्रयास करते हैं।

स्रोत : फ़ाउंडेशनल स्टेज के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा। 2.4.5 क्षेत्र : सौन्दर्यशास्त्रीय और सांस्कृतिक विकास। पृष्ठ-60

इन गतिविधियों से विद्यार्थियों के सीखने का आकलन करते हुए शिक्षक को कला एवं सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक शिक्षा, दोनों की दक्षताओं को ध्यान में रखना चाहिए। उदाहरण के लिए, भूमिका-निर्वाह के समय शिक्षक को इसका अवलोकन करना चाहिए कि कला दक्षता के रूप में वे किस तरह अपनी आवाज़, शरीर, स्थान और नाट्य सामग्री का इस्तेमाल कर रहे हैं। और ठीक उसी समय शिक्षक को यह भी देखना चाहिए कि सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक शिक्षा की दक्षता के रूप में विद्यार्थी अपने साथियों के साथ किस तरह का सहयोग कर रहे हैं।

ऊपर जिन गतिविधियों की चर्चा है वे महज चन्द उदाहरण हैं। कला पाठ्यचर्या को लागू करते वक़्त यह बेहद ज़रूरी है कि हम सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक शिक्षा की दक्षताओं व सीखने के मानकों पर लगातार ध्यान देते रहें और उसके अनुसार अपनी रणनीतियाँ बदलते रहें। इसके साथ ही अन्य पहलू भी उतने ही महत्त्वपूर्ण हैं जैसे विद्यार्थियों को उनकी पसन्द की भाषा में अभिव्यक्ति की अनुमति देना, विद्यार्थियों के साथ सार्थक जुड़ाव स्थापित करना, सकारात्मक माहौल बनाना और एक सुसंगत समय-सारणी व ढाँचागत वातावरण बनाए रखना ताकि विद्यार्थी अपनी भावनाओं को साझा करने में सहज रहें और उनके बीच स्वस्थ सम्बन्ध विकसित हों।

समावेशिता को अपनाते हुए हमारा स्कूल सभी तरह की आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों से आने वाले विद्यार्थियों के साथ ही विभिन्न शारीरिक व मानसिक क्षमताओं वाले विद्यार्थियों का स्वागत करता है। यह विविधता एक ऐसे माहौल को प्रोत्साहित करती है जहाँ विद्यार्थी सहनशील होना, सहयोगी होना और एक-दूसरे की मदद करना सीखते हैं।

शुभा एच.के. अज़ीम प्रेमजी स्कूल बेंगलूरु की वाईस प्रिंसिपल हैं। वह अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन के साथ 2007 से जुड़ी हुई हैं। इस दौरान उन्होंने बहुत-सी ज़िम्मेदारियाँ निभाई हैं जिनमें 12 वर्ष तक प्रवासी मज़दूरों के बच्चों के लिए 2 ब्रिज सेंटरों का संचालन शामिल है। वह उस कोर ग्रुप का भी हिस्सा थीं जिसने अज़ीम प्रेमजी स्कूलों की पाठ्यचर्या तैयार की और विभिन्न जगहों पर इन स्कूलों की स्थापना की। वह उस समूह का भी हिस्सा थीं जिसने बुनियादी वर्षों के लिए कर्नाटक राज्य की पाठ्यचर्या को तैयार किया और *आँगनवाड़ी* शिक्षिकाओं के साथ काम करते हुए इस पाठ्यचर्या को लागू करने के लिए उनकी क्षमताएँ विकसित करने में मदद की। उनसे *shubha@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : मनीष आज़ाद **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय